वैश्विक स्तर पर हिन्दी का साहित्य हिंदी का वैश्विक स्वरूप: आवश्यकता

डॉ. आशु फुल्ल
हिंदी प्रवक्ता
शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा राजकीय महाविद्यालय
पालमपुर जिलाकांगड़ा हिमाचल प्रदेश 176061

द्रूतगामी परिवर्तनों तथा बहुसंख्यक उपलब्धियों सहित आज के समय में विज्ञान और तकनीक के आश्रय मानव समुदाय भूमंडलीकरण के दौर में प्रवेश कर रहा है। स्थलीय और भौगोलिक परिधियां समाप्त हो रहीहै। वर्तमान विश्व व्यवस्था आर्थिक तथा व्यापारिक आधार पर ध्रुवीकरण तथा पुनर संघटन की जटिल प्रक्रियाओं से गुजर रही है। विश्व बाजार के इस क्रांतिकारी परिदृश्य में ज्ञान विज्ञान की समस्त शाखाएं मांग तथा आपूर्ति के नियम अनुसार बिक्री की संभावनाओं को तलाश रहे हैं। इस प्रक्रिया में आवागमन संचार साधनों और तकनीकी तत्वों में अभूतपूर्व वृद्धि देखने में आ रही है। इन सभी महत्वपूर्ण घटकों ने अन्य क्षेत्रों के साथ साथ हिंदी भाषा और इसके साहित्य के संसार में बहुत हलचल मचा दी है तथा असंख्य बदलावों की ओर अग्रसर कर दिया है। साहित्य अमृत पत्रिका के सितंबर 2018 अंक में प्रस्तुत आलेख नई हिंदी का वैश्विक स्वरूप में सूचित किया गया कि'जिस हिंदी के विकास में सरकारी तंत्र अनेक वर्षों से प्रयास चल रहा है और जिसने हिंदी को केवल किताबों तक ही सीमित कर दिया उमा बाजार ने उसी हिंदी का बहुत ही रचनात्मक और व्यावहारिक प्रयोग करके हिंदी की सूरत बदल कर नई हिंदी का निर्माण किया।""इंडिया टुडे के अंक नवंबर 2018 के पृष्ठ 169 में घोषित हुआ''70 के दशक में हिंदी जब अंग्रेजी हटाओ की मांग करने वाली भाषा थी वही आज इंग्लिश बनकर ग्लोबल पीढ़ी के उन्मुक्त संवाद की भाषा है । वह सोशल मीडिया के तुरंत कनेक्ट की, चैट की भाषा बन गई है। स्लो मोशन वाली हिंदी अब fast&forward कम्युनिकेशन की भाषा है। ग्लोबल कनेक्टिविटी का खिताब इसी हिंदी को मिला है।" "हिंदी का विश्व भाषा में ऐसा रूपांतरण निश्चय ही हिंदी भाषा और साहित्य सेवी यों के लिए सुखद समीर सदृश है। आज हिंदी राष्ट्रभाषा की गंगा से विश्व भाषा की गंगासागर बनने की प्रक्रिया मेंहै। वैश्विक स्तर पर हिंदी और इसके साहित्य के पुख्ता अस्तित्व के लिए यूनिकोड एंड कोडिंग सिस्टम का मनी योगदान रहा है जिसने हिंदी भाषा और साहित्य के बाजार को व्यापक विस्तार दिया है। हिंदी आज वैश्विक समाजों का अभिन्न हिस्सा बनने में इसलिए भी कामयाब हो पाई है क्योंकि जिस ब्लॉग की चर्चा कभी अंग्रेजी भाषा संदर्भ में होती थी आज हिंदी साहित्य लेखक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ब्लॉग लेखन से कुशल रचनात्मक क्षमता का लोहा सफलतापूर्वक मनवा रहे हैं।

साहित्य अमृत पत्रिका के अंक अगस्त 2018 में लेखिका कविता सिंह के आलेख'"आर्मेनिया में हिंदी एवं भारतीय संस्कृति' की ये पंक्तियां तथ्य की द्योतक ''है'' वैश्विक हिंदी की सार्थकता विश्व हिंदी के बोध आदर्श वाक्य वसुधैव कुटुंबकम में निहित है और यही हिंदी भाषा के विश्व भारती होने का कारण और उद्देश्य दोनों है (पृष्ठ 36) स्पष्ट है जिस भाषा का आदर्श ही समस्त वसुधा को अपना परिवार मान लेना हो तो वह भाषा संपूर्ण वसुधा के जन–जन और कोने कोने तक प्रसारित होकर वैश्विक भाषा के रूप में गौरवान्वित होगी ही।

एक समय था जब हिंदी का अध्ययन साहित्य संस्कृति और एक भाषा के रूप में प्रमुखता से किया जाता था वहीं आज हिंदी एक व्यवसायिक और व्यावहारिक भाषा के रूप में अपनाई जा रही है। साहित्य के माध्यम से अपनी संस्कृति मान्यताओं और सांस्कृतिक संपत्तियों को ऑक्शन रखने का प्रयास भी साहित्य सेवियों द्वारा किया जा रहा है वही आजीविका हेतु प्रयोजनमूलक हिंदी व्यवहार में लाई जा रही है। अनेक विदेशी विद्वानों ने भी सांस्कृतिक दूत हिंदी को खुले मन से अपनाया और उत्कृष्ट कोटि का साहित्य लेखन और अनुवाद प्रस्तुत किया। विश्व पटल पर हिंदी साहित्य के विराजित होने में विस्थापन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह साहित्यबाजारवाद, सूचना क्रांति ,उद्योगी की करण तथा तकनीकी विकास के परिणाम स्वरुप विश्व परिदृश्य से जुड़कर अपनी अपनी जगह ले रहा है। विस्थापन के वक्त जगह लेते समय लोग अपनी संस्कृति ,समाज,रीति रिवाज और परंपराएं यहां वहां फैला देते हैं। हिंदी साहित्य भी इसी संवेदना से एकमेक होता अपनी जगह और अपनी पहचान पुख्ता बनाने में लगा हुआ है।

वर्षों पूर्वा जीविकोपार्जन हेतु विदेश गए और वहां बस से गए असंख्य भारतवंशी लेखक हिंदी और हिंदी साहित्य की अस्मिता के संरक्षण हेतु साहित्य सृजन करके हिंदी और भारतीय भाषाओं के लिए पाठकों की विशाल जमात तैयार कर रहे हैं। हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियों का विदेशी भाषाओं जैसे फ्रेंच, स्पेनिश, अंग्रेजी, रूसी ,जापानी ,चीनी भाषा में

ISBN: 978-81-954645-0-0

अनुवाद करके विश्व के कोने–कोने में हिंदी पहुंचा रहे हैं। इसी क्रम में विदेशों में गतिशील विभिन्न हिंदी सेवी संस्थाएं तथा पत्र पत्रिकाएं भी हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए पूरे मनोयोग से जुटी हुई है।

हिंदी भाषा का अंतरराष्ट्रीय अध्ययन स्तर

आज के समय में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 40 से अधिक देशों में लगभग 680 विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का अध्ययन और अध्यापन किया जा रहा है। सन 2017 में ज़ी न्यूज़ द्वारा करवाए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार जापान में छह और कनाडा और अमेरिका में लगभग 113 विश्वविद्यालयों तथा कॉलेजों में हिंदी के अध्ययन केंद्र हैं जिनमें 1320 स्तर के हैं। अमेरिका की यह यूनिवर्सिटी में 1815 से हिंदी भाषा शिक्षण की व्यवस्था है। व्यापारिक दृष्टिकोण से अमेरिका की ही पेंसिलवेनिया यूनिवर्सिटी में एमबीए छात्रों हेतु हिंदी का दो वर्षीय कोर्स अनिवार्य कर दिया है। यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टइंडीज में हिंदी पीठ की स्थापना की गई है। गुआना ऐसा देश है जहां स्नातक स्तर पर हिंदी भाषा के अध्ययन का प्रावधान है। भारत के पड़ोसी देशों में श्रीलंका की असली भाषा हिंदी क्षेत्र की ही भाषा है। नेपाल में हिंदी को उच्च शिक्षा के लिए प्राथमिकता दी गई है। नेपाल की त्रिभुवन यूनिवर्सिटी में हिंदी विभाग स्थापित है। चीन के विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का पठन–पाठन निरंतर जारी है।

हिंदी साहित्य का अंतरराष्ट्रीय लेखन स्तरः संदर्भ विदेशी विद्वान

साहित्य संस्कृति और भाषा का अटूट संबंध के संदर्भ में असंख्य विदेशी लेखकों ने हिंदी के विकास हेतु अपना अमूल्य योगदान अतीत में भी दिया और वर्तमान में पूरे मनोयोग से दे रहे हैं। हिंदी भाषा और साहित्य के लिए संपूर्ण जीवन समर्पित करने वाले फादर कामिल बुल्के का योगदान कौन भुला सकता है जिन्होंने हिंदी शोध अनुवाद और कोष निर्माण हेतु अपनी अमूल्य सेवाएं प्रस्तुत की। इनके द्वारा तैयार अंग्रेजी शब्दों के स्पीक हिंदी पर्याय शब्दों हेतु अंग्रेजी हिंदी शब्दकोश आज भी सर्वश्रेष्ठ प्रमाणिक ग्रंथ माना जाता है। बेल्जियम निवासी फादर बुल्के ने जैसे ही भारतीय दर्शन की बारीकियों को जाना समझा वैसे ही भारत को गहराई से जानने परखने की ललक को मन में जगा लिया। भारत आकर हिंदी में एमए और पीएचडी की डिग्री प्राप्त की और आजीवन रांची के सेंट जेवियर्स कॉलेज में अध्यापन किया। इन्होंने बाइबल का नील पक्षी नाम से हिंदी अनुवाद प्रकाशित करवाया। तुलसी साहित्य के मर्मज्ञ रूप में सुप्रसिद्ध हुए। हिंदी सेवा और समर्पण को देखते हुए भारत सरकार ने फादर बुल्के को 1972 से 1977 तक केंद्रीय हिंदी समिति का सदस्य बनाया और 1974 में पदम भूषण से अलंकृत किया।

सत्रहवें वर्ष में हिंदी सीखने का आरंभ और 50 में वर्ष तक की आयु तक हिंदी में पीएचडी, हिंदी का सटीक और स्पष्ट उच्चारण, हिंदी साहित्य में गहरी पैठ , हिंदी साहित्य की अनेक कृतियों का अंग्रेजी अनुवाद,भारतीय साहित्य और संस्कृति से संबंधित शोध परक आलेख तथा सफल कविता लेखन जैसी उपलब्धियों को लिए इंग्लैंड निवासी डॉ रुपर्ट स्नेल की हिंदी सेवा हिंदी साहित्य विकास के लिए अनमोल रही है। डॉक्टर स्नेलपहले हिंदी के व्याख्याता हुए तत्पश्चात लंदन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज में हिंदी के रीडर और विभागाध्यक्ष बने। प्रेमचंद और यशपाल की कहानियों का अंग्रेजी अनुवाद के साथ–साथ हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा का अंग्रेजी अनुवाद इन द आफ्टरनून ऑफ टाइम शीर्षक से किया। धर्मवीर भारती की पुस्तक कनुप्रिया का अंग्रेजी अनुवाद इन का अन्यतम कार्य है।

1282 में कोलकाता में सेंट विलियम फोर्ट कॉलेज में अंग्रेजी के प्रोफेसर जॉन गिलक्रिस्ट ने हिंदुस्तानी विभाग में कार्य करते हुए हिंदी मैनुअल तथा हिंदी स्टोरी टेलर नामक पाठ्य पुस्तकों का निर्माण किया। डॉक्टर मोनियर विलियम्स ने 1890 में हिंदुस्तानी प्राइमर और प्रैक्टिकल हिंदुस्तानी ग्रामर पुस्तकें लिखी। प्रोफ़ेसर ग्राउस की सर्वाधिक ऐतिहासिक उपलब्धि तुलसीदास कृत रामायण का अंग्रेजी अनुवाद है जो आज भी सर्वाधिक प्रमाणिक अनुवाद है। डॉक्टरएफ ई के लंदन निवासी थे। 1922 में लंदन विश्वविद्यालय ने उन्हें कबीर एंड हिस फॉलोअर्स शोध ग्रंथ पर डी लिट की उपाधि प्रदान की। प्राचीन भारतीय शिक्षा इन की महत्वपूर्ण साहित्य रचना है। ब्रिटेन के हिंदी प्रेमियों के मध्य बेहद सम्मानित विद्वान फ्रेडरिक पिन कार्ड की बाल दीपक पुस्तक चार खंडों में प्रकाशित हुई।

भारतीय संस्कृति और रीति–रिवाजों के प्रति आस्था शील रहे चैक विद्वान डॉक्टर समेकल आजीवन हिंदी को अपनी दूसरी मातृभाषा मानते रहे। हिंदी में पीएचडी की तथा 8 कविता संग्रह का सृजन किया। प्रेमचंद के गोदान का चेक भाषा में अनुवाद इनकी उल्लेखनीय उपलब्धियां हैं। जर्मनी के लुठार लुत्से हिंदी के विदेशी साहित्य कारों के रूप में बहुचर्चित नाम है। डॉक्टर लुत्से हाइडेल वर्ग विश्वविद्यालय में भाषा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष रहे। हिंदी कविताओं का

जर्मन भाषा में अनुवाद करके ख्याति प्राप्त की।

आधुनिक हिंदी कविता विषय पर पीएचडी प्राप्त रूस के डॉक्टर चैलीशैवने रूसी और भारतीय साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन पर लगभग 200 पुस्तकें लिखी। एक अन्य दूसरी विद्वान पी ए वारानिकोव ने रामायण का रूसी भाषा में अनुवाद किया। यहां उल्लेखनीय है अकेले रूस में जितने अनुवाद हिंदी भाषा में हुए हैं उतने अन्य किसी भाषा के नहीं।

भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध अभिरुचि रखने वाले पोलैंड के प्रोफेसर मारिया ने हिंदी और संस्कृत के कुछ नाटकों तथा मनुस्मृति और इडा समृति का पोलिश भाषा में अनुवाद किया। जापान में हिंदी साहित्य को लोकप्रियता के शिखर तक ले जाने वाले को निवारकों कोजुका ने एक अलग माध्यम का चुनाव किया उन्होंने हिंदी सिनेमा की उल्लेखनीय साहित्यिक रचनाओं तथा हिंदी शिक्षा में क्रांतिकारी संभावनाओं को तलाशा। टीवी नाटकों के माध्यम से हिंदी शिक्षण की व्यापक सामग्री तैयार की तथा हिंदी नाटकों का शहर शहर मंचन करवाना उनका यह शौक रहा। प्रोफेसर क्यूमां ने जापानी हिंदी तथा हिंदी जापानी शब्दकोश का निर्माण करके दोनों भाषाओं को परस्पर जोड़ा। प्रोफेसर दोह गोदान का जापानी भाषा में अनुवाद किया। प्रोफेसरतोशियो तबाका और डॉक्टर तोजिओ अन्य ऐसे बहुचर्चित नाम है जिन्होंने हिंदी का विकास साहित्य के प्रचार प्रसार माध्यम से किया।

इन विद्वानों के अतिरिक्त कनाडा की कैथरीन ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय में भारतीय भाषा और साहित्य की प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाएं दे रही है। हिंदी लेखकों की रचनाओं का अंग्रेजी अनुवाद करने की कला में निपुण है। हिंदी भाषा और साहित्य को विश्व मंच पर प्रस्तुत करने में चीनी विद्वानों का उल्लेखनीय योगदान रहा है। चीन के प्रोफेसर जिन डिंग हान ने पहले हिंदी सीखी तथा मानस का चीनी भाषा में अनुवाद किया। प्रोफेसर गीनशेंवा बाल्मीकि रामायण का चीनी भाषा में अनुवाद किया।

हिंदी भाषा का अंतरराष्ट्रीय लेखन स्तरः संदर्भ अप्रवासी भारतीय विद्वान

व्यवसाय घटनाओं के कारण पीढ़ियों पहले भारत से विदेश जाकर बसे हुए अप्रवासी भारतीय लेखकों ने वैश्विक परिदृश्य पर हिंदी साहित्य की प्रतिमा को मजबूती से स्थापित किया है और हिंदी भाषा के प्रति अगाध आस्था को जीवंत रखा है। इसी कड़ी में सर्वप्रथम वे लेखक आते हैं जो मॉरीशस, सूरीनाम फिजी,त्रिनिदादजैसे देशों में जाकर बसे। वहां की राजनीति और प्रशासन के महत्वपूर्ण पदों पर आसीन रहते हुए इन विद्वानों ने स्वतंत्र लेखन किया। इस श्रृंखला में पहले पायदान पर आते हैं लेखक अभिमन्यु अनंत जो आज इतिहास बन चुके हैं। श्रमजीवियों का बहता पसीना और दबा कुचला आक्रोश अभिमन्यु की संवेदनशील करुणा का केंद्र बना। इस संदर्भ में 1977 में प्रकाशित बहुचर्चित उपन्यास लाल पसीना भारत से मॉरीशस आए गिरमिटिया मजदूरों की करुण कहानी कहता है जिसका बाद में फ्रेंच और अंग्रेजी भाषा में अनुवाद हुआ। कैक्टस के दावे,नागफनी में उलझी सांसे,गूंगा इतिहास, देख कबीरा हांसी, इंसान और मशीन ,कुहासे का दायरा,एक बीघा प्यार इनकी अन्य रचनात्मक अभिव्यक्तियांहै। 30 के लगभग उपन्यास लिखे हैं। इनके अतिरिक्त कृष्ण बिहारी मिश्र कुमार राजवंशी, हेमराज सुंदर रामदेव धुरंधर आदि उपन्यासकार हैं जो हिंदी भाषा में मारीशस के जनजीवन कोशब्दोंमें बांध रहे हैं। फिजी में पंडित कमला प्रसाद ,पंडित कांशीराम और गुरुदयाल शर्मा तथा सूरीनाम में अमर सिंह रमन , गीत नारायण , सूर्य प्रसाद हिंदी साहित्य लेखन कर रहे हैं।

अमेरिका निवासी उषा प्रियंवदा ने श्रेष्ठ को टीका हिंदी कथा साहित्य रचा है। व्यवसाय से अध्यापक रही उषा प्रियंवदा फुलब्राइट स्कॉलरशिप लेकर अमेरिका में 1964 में विश्व का सीन विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यरत रही। उनके कथा साहित्य में छठे और सातवें दशक के भारतीय नगरीय पारिवारिक और सांस्कृतिक परिवेश का संवेदनशील चित्र प्रस्तुत हुआ है। इनके उल्लेखनीय कहानी संग्रह है बनवास इतना बड़ा झूठ कमा जिंदगी और गुलाब के फूल कमा एक कोई दूसरा आदि। रुकोगी नहीं राधिका शेष यात्रा पचपन खंभे लाल दीवारें भैया कभी उदास इनकी 79 कृतियां हैं जो विदेशी परिवेश में रखकर ही लिखी गई है। भारतीय मूल की अमेरिकी उपन्यासकार अभिनेत्री और शिक्षाविद संवेदी अनेक उपन्यासों और कहानियों को लिखने में व्यस्त रहे हैं। बहुचर्चित हवन और वापसी उपन्यास उर्दू और अंग्रेजी में अनूदित हुए। लघु कथाओं का संग्रह चिड़िया और चील तथा कतरा कतरा भी उल्लेखनीय है। इनके द्वारा संचालित हिंदी भाषा शिक्षण कार्यक्रम बहुत ही महत्वपूर्ण और रेखा अंकित कार्य है जो भारत और शेष विश्व के मध्य संवाद को मजबूत करने में संलग्न है। विश्व हिंदी न्यास न्यूयॉर्क के अध्यक्ष डॉ राम चौधरी द्वारा संचालित हिंदी गोष्ठियों तथा कवि सम्मेलनों में भी सक्षम बेदी की सक्रिय भागीदारी रही है। राम चौधरी न्यूयॉर्क में हिंदी जगत पत्रिका का संपादन करते हैं और प्रत्येक वर्ष हिंदी अधिवेशन का आयोजन करते हैं जिसमें पूरे अमेरिका के प्रतिनिधि भाग लेते

हैं।

गत वर्षों से कथाकार तेजेंद्र शर्मा के नेतृत्व में इंग्लैंड में हिंदी साहित्य की गतिविधियां बहुत अधिक विकास मान रही हैं। दिवंगत पत्नी इंदू शर्मा की स्मृति में वे हर वर्ष अंतर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान समारोह का आयोजन करते हैं जिसके अंतर्गत विभिन्न कवि गोष्ठियों और साहित्यिक सम्मेलनों का संयोजन करके साहित्य विचार विमर्श के अवसर प्रदान किए जाते हैं। काला सागर, ढिबरी टाइट कमा देह की कीमत का मां यह क्या हो गया कमार्बे घर आंखें इनके चर्चित कहानी संग्रह हैं जिनका अनुवाद नेपाली पंजाबी उर्दू भाषाओं में हुआ।

इंग्लैंड की ही पूर्णिमा वर्मन की काव्यगत रचनाओं फुलकारी (पंजाबी भाषा में), मेरा पता (डेनिश भाषा में), चाय खाना (रूसी भाषा में) का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ। इन के संपादन में संयुक्त राज्य अमेरिका से हिंदी इंटरनेट पत्रिकाएं अभिव्यक्ति और अनुभूति की विषय सामग्री का पाठन करके लोकमानस तृप्त हो रहा है। हिंदी समिति यूके पत्रिका की उपाध्यक्ष तथा पुरवाई (त्रैमासिक) पत्रिका की संपादक का उषा राजे विदेश में साहित्य रक्त अनेक लेखकों को सांझा मंच देने में एक कामयाब नाम है। वे तीन दशकों तक ब्रिटेन के बारो ऑफ मटन की शैक्षिक संस्थाओं में विभिन्न उच्च पदों पर कार्यरत रही है। विश्वास की रजत सीपियां, इंद्रधनुष की तलाश (काव्य संग्रह), तथा प्रवास में और वाकिंग पार्टनर (कहानी संग्रह)रचनाओं में मानवीय अनुभूतियों को बारीकी और सूक्ष्मता से तराशा है।

इस संदर्भ में अन्य प्रमुख साहित्यकारों में सोमा वीरा, कमला दत्त सुनीता जैन ,वेद प्रकाश इंदु कांत शुक्ला, उमेश अग्निहोत्री, सुरेश राय,मिश्रीलाल जैन ,शालिग्राम शुक्ला, रेखा रस्तोगी, स्वदेश राणा ,नरेंद्र कुमार सिन्हा, अशोक कुमार सिन्हा, अनुराधा चंद्र, ललित आहलूवालिया, आर्य भूषण, वेद प्रकाश सिंह अरुण आदि का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने विदेशी जमीन पर रहकर हिंदी साहित्य लेखन की निरंतरता को बनाए रखा।

साहित्य लेखन के अतिरिक्त विभिन्न हिंदी भाषा संस्थान और संस्थाएं भी अलग–अलग देशों में सक्रियता से हिंदी साहित्य के विकास में महनीय योगदान दे रही हैं। ब्रिटेन में बहुसंख्यक हिंदी संस्थाएं गतिशील है। यूके हिंदी समिति का संचालन श्री पद्मेश गुप्त और श्रीमती उषा राजे सक्सेना करते हैं। गीतांजलि बहुभाषी समुदाय नामक संस्था डॉ कृष्ण कुमार और सुश्री तितिक्षा की देखरेख में चल रही है। भाषा संगम का संचालन डॉक्टर महेंद्र वर्मा कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय हिंदी कवि सम्मेलन और भाषा सम्मेलन इन्हीं संस्थाओं के द्वारा करवाए जाते छठा विश्व हिंदी सम्मेलन लंदन में ही आयोजित किया गया। अमेरिका में भारत के विभिन्न प्रांतों से आए बहुभाषी लोग बसे हुए हैं। हिंदी की अस्मिता और पहचान के लिए संस्थाओं द्वारा करवाए जाते हिंदी कार्यक्रमों में बहुसंख्यक भारतीय लोग एकत्रित होते हैं और गहन विचार–विमर्श में प्रतिभागिता सुनिश्चित करते है। अमेरिका के वॉशगटन में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति अत्यधिक सक्रिय संस्था है जो समय–समय पर हिंदी दिवस कवि गोष्ठियों और बौद्धिक स्तरीय साहित्य सम्मेलनों का सफल आयोजन करवा रही है। मधु महेश्वरी ,धनंजय कुमार और विशाखा ठाकुर इस संस्था के संचालक हैं।

व्यक्तिगत और संस्थागत स्तर पर किए जा रहे हिंदी साहित्य विकास के परिचालन में पत्र–पत्रिकाओं की भी अन्यतम भूमिका है। अमेरिका से अंतर्राष्ट्रीय विश्व हिंदी समिति की सौरभ, विश्व हिंदी न्यास की हिंदी जगत तथा श्रेष्ठतम वैज्ञानिक पत्रिका विज्ञान प्रकाश जहां हिंदी की दीपशिखा को जलाए हुए हैं तो मॉरीशस से बसंत, आक्रोश और इंद्रधनुष नियमित पत्रिकाएं हिंदी के सार्वभौमिक विस्तार को गति दे रही हवस्तुतः विश्व स्तर पर हिंदी साहित्य के माध्यम से जहां भिन्न–भिन्न देशों में बसे हुए प्रवासियों को परस्पर जुड़ने और संवाद के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है वही प्रवासियों की मानसिक स्थितियों को मां कोमल भावनाओं कामा सांस्कृतिक संपदा तथा दर्शन और चिंतन की अभिव्यक्ति को शाश्वत बनाए रखने हेतु हिंदी भाषा और साहित्य अपनी भूमिका की सार्थकता को पूरे मनोयोग से सिद्ध कर रहे हैं। संप्रेषण की नवीन तकनीकों के साथ समुचित समन्वय स्थापित करके हिंदी और साहित्य की भूमिका को और अधिक लाभदायक परिप्रेक्ष्य में देखा परखा जा रहा है। इसी कड़ी में भारत सरकार और मॉरिशस सरकार के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी सचिवालय का स्थाई कार्यालय मारीशस में स्थापित किया गया है। विश्व हिंदी सम्मेलन भी हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार प्रसार में अपनी भूमिका को महत्वपूर्ण बना रहे हैं।

निष्कर्ष

आज के समय में गुण और परिमाण दोनों दृष्टि से हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य वैविध्य पूर्ण तथा बहु स्तरीयता में संपूर्ण विश्व में संस्कृत काव्य को छोड़कर सर्वोपरि बने हुए हैं। हिंदी की मूल प्रवृत्ति लोकतांत्रिक तथा रागात्मकसंबंध निर्मित करने की रही है। आज वह विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की ही राष्ट्रभाषा नहीं है अपितु समस्त प्रभावशाली देशों के परस्पर रागात्मकजुड़ाव और संवाद विनिमय का सबल माध्यम भीहै। आज जब 21वीं सदी में वैश्वीकरण के

दबावों के चलते समस्त देशों की संस्कृतियों और भाषाएं मजबूत और सार्थक संवाद की प्रक्रिया से गुजर रही हैं तो हिंदी निश्चय ही इस दिशा में विश्व मानवता को परस्पर जोड़ने के लिए सेतुकी भूमिका निभा सकती हैं क्योंकि उसके पास ऐसा विशाल पाठक वर्ग हैजो विश्व के कोने कोने में फैला हुआ है ।उसके पास प्राचीन समय से ही बहुविध सांस्कृतिक परिवेश में सक्रिय रहने का अनुभव है जिससे वह अपेक्षाकृत अन्य भाषाओं की तुलना में अधिक रचनात्मक भूमिका निभाने की सुखद स्थिति में है।

विश्व समुदाय के समक्ष हिंदी साहित्य की व्यापक स्वीकृति के लिए प्रभावी प्रयास निरंतर जारी हैं। जितनी बहुसंख्यक मात्रा में विदेशों में हिंदी साहित्य का अध्ययन अध्यापन और पाठन हो रहा है इससेहिंदी भाषा और साहित्य के वैश्विक स्तर की व्यापकता पर पक्की मुहर लगती चलती है। हम सब भारतीयों से भी यही सब की अपेक्षा है कि जहां–जहां रहे जिस जिस क्षेत्र में कार्यरत रहे वहां वहां अपने दायित्व बोध को गहराई से अनुभव करते हुए और सुदृढ़ इच्छाशक्ति से संकल्पित होते हुएहिंदी और साहित्य के विकास की यात्रा में शामिल हो जाएं और कबीर दास के कहे'भाषा बहता नीर'शब्दों को सार्थकता की मंजिल तक पहुंचा सके।

ISBN: 978-81-954645-0-0